Bhajan

05

मन चंचल चल राम शरण में

मनसा वाचा कर्मणा, मैं हूँ मेरे राम,
अर्पित तेरी शरण में, सहित कर्म शुभ काम ॥

मन चंचल चल राम शरण में ॥

राम ही तेरा जीवन साथी,
मित्र हितैषी सब दिन साथी,
दो दिन के हैं ये जग वाले,
हरि अंग संग है जन्म मरण में ॥१॥

जग में तूने प्यार बढ़ाया,
कितना सिर पर भार चढ़ाया,
पल-पल मुश्किल होगी रे पगले,
भवसागर के पार करन में ॥२॥

सब चिंता मिट जायें तेरी,
भज ले तज दे हेरा फेरी,
इक निर्दोष ठिकाना कर ले,
शरण मिले हरि कमल चरण में ॥३॥

मैं पतित पुरातन तेरी शरण

मैं पतित पुरातन तेरी शरण,
निज जान मुझे स्वीकार करो,
हूँ कब कब का साथी तेरा,
युग युग का हल्का भार करो ।।

दोहा- भक्ति भावना हीन हूँ, ज्ञान ध्यान से हीन
पर तव द्वार का भिक्षु मैं, दूँ तेरा जन दीन

मैं भिक्षुक हूँ दातार हो तुम,
यह नैय्या खेवनहार हो तुम ।
इस पार हो तुम, उस पार हो तुम,
चाहो तो बेड़ा पार करो ।।
मैं पतित पुरातन तेरी शरण . . .

मैं कुछ भी भेंट नहीं लाया,
बस खाली हाथ चला आया ।
अब तक तो तुमने भरमाया,
पर गुपचुप न हर बार करो ।।
मैं पतित पुरातन तेरी शरण . . .

मैं चल न सकूँ तेरी ऊँची डगर,
हाय, झुक न सके मेरा गर्वित सिर ।
'निर्दोषकहूँ मैं , सौ सौ बर,
प्रभु अपनी कृपा इस बार करो ।।
मैं पतित पुरातन तेरी शरण . . .

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे

राम अब स्नेह सुधा बरसा दे ॥

भक्ति बदलिया उमड़ झूमती,
झड़ियां सरस लगा दे ॥१॥

घट में घटा घन नाम गर्ज से,
मन मयूर नचा दे ॥२॥

परम धाम की कृपा परा का,
पानी पूर बहा दे ॥३॥

पाप ताप से तप्त हृदय-मन,
शीतल शांत बना दे ॥४॥

ऊधौ कर्मन की गति न्यारी

ऊधौ कर्मन की गति न्यारी ।

उज्जवल पंख दिये बगुले को,
कोयल किस विधि कारी ॥१॥

सब नदियाँ जल भर भर रहियाँ,
सागर किस बिधि खारी,
सुन्दर नैन दिए मृगनी को,
बन-बन फिरत उजारी ॥२॥

मूरख-मूरख राजा कीन्हें,
पंडित फिरे भिखारी,
सूर श्याम मिलने की आशा,
पल छिन बीतत भारी ॥३॥

मेरे स्वामी अंतर्यामी

मेरे स्वामी अंतर्यामी,
तू सब के मन की जाने,
मैं किसको जाऊँ सुनाने ॥१॥

कैसे हैं ये रिश्ते नाते, कौन यहाँ है अपना,
झूठा जग का है ये बन्धन, झूठा है ये सपना,
मैं आया तुम्हें मनाने ॥२॥

तेरा हर पल ध्यान धरूँ मैं, कष्ट हरो प्रभु मेरे,
नाथ मेरे अब मुझे उबारो, द्वार पड़ा हूँ तेरे,
मैं आया तुम्हें रिझाने ॥३॥

जन्म जन्म का नाता तुमसे, अब तक न था जाना,
हर द्वारे पर ठोकर खाके, दामन तेरा थामा,
मेरे छूटे सभी ठिकाने ॥४॥

तेरा साथी राम

युग युग का है राम सहेला,
राम भक्त नहीं रहे अकेला ।

तेरा साथी राम मनवा क्यों घबराए रे ।

पल भर भी तू नहीं अकेला,
पग-पग तेरा राम सहेला,
वह है तो कुछ नहीं दुहेला,
निशिदिन आठों याम, मनवा क्यों घबराए रे ॥१॥

अंग संग नित साथ है तेरे,
घट में ही तो वास है तेरे,
निकट कि सांस सांस है तेरे,
आनन्द कन्द घनश्याम, मनवा क्यों घबराए रे ॥२॥

दुःख सुख आता है जाता है,
राम विमुख ही विचलाता है,
पर निर्दोष न घबराता है,
सब तज भज हरिनाम, मनवा क्यों घबराए रे ॥३॥

जरा आ शरण मेरे राम की

जरा आ शरण मेरे राम की,
मेरा राम करुणा-निधान है,
घट घट में है वो रम रहा,
वो ही जगत का भगवान है ॥१॥

लिया आसरा जिन नाम का,
वो ही बन गया प्रभु राम का,
जिस नाम से पत्थर तरे,
फिर तेरा तरना आसान है ॥२॥

भक्ति में उसकी तू हो मगन,
उसे पाने की तू लगा लगन,
तेरे पाप सब धुल जायेंगें,
ये नाम इतना महान है ॥३॥

तेरे भक्त कब से पुकारते,
चरणें में अरज गुजारते,
मत भूल जाना ए प्रभो,
तेरे भक्त बड़े अंजान हैं ॥४॥

किसी भाव से

किसी भाव से किसी नाम से, जप ले रे भगवान ।
किसी रूप में कर ले रे नर, नारायण का ध्यान ॥

बोलो राम राम राम राम राम,
बोलो राम सीता राम सीता राम सीता राम ।

राम रहीम कहो या अल्लाह सब हैं उसके नाम ।
मन्दिर मस्जिद गिरजा द्वारा सारे उसके धाम ।
जी चाहे तू जिस भाषा में कर उसका गुणगान ॥१॥

मथुरा काशी मक्का मत जा, बैठ बुहारे गाँव ।
जहाँ बैठकर भजन करेगा, राम करेगा छाँव ।
आप राम आकर के पूछे, तेरा पता निशान ॥२॥

देख अरे निर्दोष भाव से, कितना शुभ संसार ।
तेरा तेरे परमेश्वर का, कितना है परिवार ।
निर्धन हीन नहीं तू मानव, अमृत-सुत धनवान ॥३॥

धुन राम राम बोल रे , राम राम बोल ।